B.A. PART – 1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय – पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य)
आधुनिक काल
शेषभाग – 5

प्रश्न :- आधुनिक काल की परिस्थितियाँ बताएँ ?

उत्तर :- शेषभाग :-

(ग) सांस्कृतिक – सामाजिक परिवेश

अँग्रेज सरकार द्वारा किये गये सामाजिक सुधार के कानून, यातायात व्यवस्था, अँग्रेजी शिक्षा का प्रबन्ध आदि का तत्कालीन समाज पर दो रूपों में प्रभाव दिखाई देता है। रक्षक वर्ग इसे अपने धर्म और संस्कृति का आघात समझकर भारतीयता से चिपका रहा, तो दूसरा वर्ग अँग्रेजी संस्कृति में रंगकर भारतीय संस्कृति से विरत होने लगा। द्वितीय वर्ग में शिक्षित सुविधाभोगी वर्ग था, जो अँग्रेजों की हाँ में हाँ मिलाकर चन्द टुकड़ों के लिए अँग्रेजों के हाथों बिक गया था। प्रथम वर्ग में जो अशिक्षित जनता थी, उसके मन में अँग्रेजों के प्रति असन्तोष और रोष था। इसी वर्ग में कुछ ऐसे शिक्षित लोग भी थे, जो यह समझते थे कि इस सांस्कृतिक संकट के समय में अपनी संस्कृति की रक्षा करनी हो, तो इसे आधुनिक वैज्ञानिक भाषा और अर्थ प्रदान करना अनिवार्य है। इसी उद्देश्य को लेकर इस कालखण्ड में विभिन्न धार्मिक – सांस्कृतिक आन्दोलन हुए, जो स्वाधीनता आन्दोलन में भी सहायक हुए। इन आन्दोलनों में प्रमुख हैं – ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, थियोसोफिकल सोसायटी, सनातन धर्म आदि। स्वामी रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द और श्री अरविन्द के वेदान्त-दर्शन तथा गाँधी के मानवतावादी विचारों का इस काल-खण्ड के सांस्कृतिक पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

इस क्षेत्र में सर्वप्रथम प्रयास राजा राममोहन राय ने किया था। ब्रह्म समाज के रूप में आधुनिक भारत की नींव का पहला पत्थर उन्होंने ही रखा था। राजा राममोहन राय ने सन् 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की। उपनिषदों को प्रमाण मानकर उन्होंने हिन्दू धर्म की वैज्ञानिकता भी प्रतिपादित की। हिन्दू – समाज में फैले कर्मकाण्डों, अन्धविश्वासों और बाह्य आडम्बरों की

निस्सारता और अधार्मिकता को 'उपनिषदों' के माध्यम से स्पष्ट किया। मूर्ति-पूजा, जाति-प्रथा, सती-प्रथा आदि कुरीतियों का उन्होंने खुला और सप्रमाण विरोध किया। विधवा-विवाह और स्त्री-पुरुष के समान अधिकार का उन्होंने समर्थन किया। राजा राममोहन राय के बाद महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन ने भी इसी दिशा में कार्य किया। सन् 1875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। स्वामीजी ने वेदों को प्रमाण मानकर भारतीय संस्कृति की नयी व्याख्या की। मूर्ति-पूजा, जातिवाद, बाल-विवाह और बहुदेववाद का विरोध करके आर्य समाज ने हरिजनोद्धार, विधवा-विवाह आदि कार्यों को प्राथमिकता दी। हिन्दू-धर्म को अन्धविश्वासों से मुक्त करने के लिए शिक्षा की अनिवार्यता को स्वामीजी ने पूरी तरह समझ लिया था, इसलिए उन्होंने गुरुकुलों की स्थापना की। उच्च शिक्षा के लिए एंग्लोवर्नाक्युलर स्कूल तथा कॉलेज खोले। 'ब्रह्म समाज' से प्रभावित होकर महाराष्ट्र में डॉ० आत्माराम पांडुरंग ने सन् 1867 में प्रार्थना समाज की स्थापना की। बाद में आर० जी० भण्डारकर और न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानाडे ने इसी के अन्तर्गत धार्मिक और सामाजिक सुधार का अमूल्य कार्य किया। जाति-प्रथा, पर्दा-प्रथा और बाल-विवाह का विरोध करके प्रार्थना समाज ने स्त्री-शिक्षा, विधवा-विवाह, अन्तर्जातीय-विवाह का समर्थन किया। इसके सदस्यों ने अनाथाश्रम, रात्रि पाठशालाएँ, विधवाश्रम, अछूतोद्धार जैसे अनेक संस्थाएँ स्थापित कीं।

रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने सन् 1898 में 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की। स्वामी विवेकानन्द ने जाति-पाँति का विरोध किया और विधवा-विवाह तथा हरिजनों को समाज में समान अधिकार देने का समर्थन किया। स्वामीजी ने अमेरिका में

सर्वप्रथम-सम्मेलन में भाषण देकर हिन्दू धर्म की पाश्चात देशों में बड़ी प्रतिष्ठा बढ़ाई। उनके प्रभावशाली भाषणों से आकर्षित होकर अनेक विदेशी उनके भक्त बन गये, जिनमें सिस्टर निवेदिता का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है। रामकृष्ण मिशन के सदस्यों ने एक ओर धर्म के सच्चे स्वरूप को व्यावहारिक रूप दिया, तो दूसरी ओर राष्ट्रीयता का प्रचार भी किया। एक रूसी महिला मादाम ब्लावौस्की और कर्नल आलकोट द्वारा अमेरिका में स्थापित "थियोसोफिकल सोसायटी" का भारत में प्रचार सन् 1893 में आयरिश महिला एनीबेसेन्ट ने किया। श्रीमती एनीबेसेन्ट ने प्रभावशाली वक्तव्य का भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की वैज्ञानिक व्याख्या का प्रभाव तत्कालीन शिक्षित समाज पर पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता था। एनीबेसेन्ट ने विज्ञान की अति-बौद्धिकता का विरोध करके भारतीय आध्यात्मिकता का उत्थान किया। काशी का सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज श्रीमती एनीबेसेन्ट की ही देन है।

हिन्दुओं की भाँति मुस्लिम समाज में भी सुधार-आन्दोलन प्रारम्भ हुए, जिनका प्रमुख उद्देश्य इस्लाम धर्म तथा समाज में प्रचलित आडम्बरों, अन्धविश्वासों और बुराइयों को दूर करना था। इसमें बहावी आन्दोलन और अलीगढ़ आन्दोलन महत्वपूर्ण थे। बहावी आन्दोलन का आरम्भ सैय्यद अहमद बरेलवी ने किया। उन्होंने पाश्चात्य सभ्यता के विरोध में कट्टर इस्लाम के सिद्धान्तों का समर्थन किया। यह आन्दोलन रूढ़िवादी था। मुसलमानों को अँग्रेजी शिक्षा और आधुनिकीकरण की ओर ले जाने का श्रेय सर सैय्यद अहमद खाँ तथा उनके अलीगढ़ आन्दोलन को दिया जाता है।

इन धार्मिक आन्दोलनों के साथ ही समाज-सुधारवादी चेतना का प्रस्फुटन हुआ। राजनैतिक और सांस्कृतिक आन्दोलन स्वाधीनता आन्दोलन के दो भिन्न

अंग रहे हैं। महात्मा गाँधी के आन्दोलन में इन दोनों का प्रभावी संगम था, जिसका प्रभाव तत्कालीन समाज और साहित्य में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अँग्रेजी शिक्षा के कारण पाश्चात्य संस्कृति और साहित्य की अनेक विचारधाराएँ भी भारतीय साहित्य को प्रभावित करती रही हैं। इनमें प्रमुख मार्क्सवाद, व्यक्तिवाद, स्वच्छन्दतावाद, अस्तित्ववाद आदि रही हैं। स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद हमारे सांस्कृतिक मूल्यों का विकास अनिवार्य हो जाता है, बाह्य रूप में हमारे समाज में उन जीवन मूल्यों का आभास अवश्य होता है, किन्तु भीतरी रूप में मध्यकालीन जीर्ण-शीर्ण मूल्यों से ही हमारा स्वाधीन समाज चिपका हुआ दिखाई देता है। इसलिए स्वातन्त्र्योत्तर सांस्कृतिक परिवेश मूल्य-विघटन और मूल्य-विहीनता का बन्दी है। देश में प्रजातन्त्र मन में मध्यकालीन मूल्य-बोध और बाह्य-रूप में पाश्चात्यों की वैज्ञानिक मूल्य-धारणा को हम एक साथ ओढ़ना चा रहे हैं, जो हमारी अनेक विसंगतियों का कारण बना हुआ है।

स्वाधीनता के पूर्व हमारी जो सामाजिक समस्याएँ थी, उनमें से कुछ अवश्य हल हुई हैं, किन्तु अधिकांश समस्याएँ आज भी हमारे सामने और भी यथावत रूप में प्रस्तुत हैं। वैधानिक रूप से जाति-प्रथा का उन्मूलन हुआ है, किन्तु जन-जीवन में वह अभी भी व्याप्त है। जमींदारी प्रथा का भी यही हाल है। आज अर्थ-प्राप्ति का माध्यम कृषि नहीं, उद्योग है और देश के उद्योग तथा व्यवसाय पर पूँजीपतियों का अधिकार है। जो सहकारी उद्योग हैं, उनमें जन-प्रतिनिधि स्वामी बन बैठे हैं।

अभ्यासर्थ प्रश्नावली

1. प्रश्न :- आधुनिक काल की राजनीतिक ~~[illegible]~~ परिस्थितियों का उल्लेख करें?

2. प्रश्न आधुनिक काल की आर्थिक परिवेश या परिस्थितियों का उल्लेख करें?

3. प्रश्न - आधुनिक काल की सांस्कृतिक - सामाजिक परिस्थितियों का उल्लेख करें?

4. प्रश्न आधुनिक काल की परिस्थितियों को बतायें?

पता
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A. B.U.M)
दिनांक - 08 . 02 . 2023
मो०न० - 7909046087